जादू

जब तुम सामने आयी
बिजली सी चमक गयी
अभी अभी छबि यहाँ थी
इन्द्र धनुष बन गयी

कोयल पेड़ पे चहकी
ना ना तुम थी गाती
फूल कलियाँ महकती
या तुम गंध बिखेरती

कैसा अजीब है जादू
आगे पीछे या बाजू
जिस दिशा में मैं देखूं
आँखें मरोड़े खड़ी तू

- नारायण
०७/१४/१४